International Journal of Jyotish Research: 2024; 9(2): 01-04

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2024; 9(2): 01-04
© 2024 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 01-05-2024
Accepted: 04-06-2024

शिवम् के दवे
पीएच.डी. छात्र, सौराष्ट्र विश्व विद्यालय, राजकोट-गुजरात, भारत

Correspondence
शिवम् के दवे
पीएच.डी. छात्र, सौराष्ट्र विश्व विद्यालय, राजकोट-गुजरात, भारत

ज्योतिष में पत्रिका मिलान

शिवम् के दवे

प्रस्तावना

पत्रिका मिलान (Matchmaking) के लिए केवल गुण मिलान ही काफी नहीं है । गुण मिलान केवल आधी-अधूरी बात पर फलित करके देख लेना जैसी बात है । एक अच्छे ज्योतिषी को केवल गुण मिलान पर आधार रख कर फलित नहीं करना चाहिए अपितु पत्रिका मिलान में जन्मपत्रिका, नवमांश, चन्द्र चार्ट, एवं भाव-चलित कुंडली से भी कुछ बाते सिद्ध करनी पड़ती है । इसका अर्थ यही है कि पत्रिका मिलान एक वर वधु के पूरे जीवन से जुडा हुआ होता है उसका पूरा जीवन उस पर निर्भर है । वर वधु के जीवन में आने वाली सभी घटनाएँ, धन की स्थिति, परिवार, वैवाहिक जीवन में प्रेम, सामंजस्य, संतान, बाधाएँ, बीमारियाँ, मृत्यु आदि का पता सही तरीके से करना पड़ता है । पत्रिका में उपस्थित दोष एवं योग को भी बारिकी से देखना पड़ता है । आज-कल गुण मिलान में २७ या ३२ गुण होने पर भी जीवन में काफी समस्याएँ देखीं गई है यहाँ तक कि तलाक कि स्थिति भी उत्पन्न होती है । इसीलिए पत्रिका मिलान में गुणमिलान के साथ जन्म के स्थित ग्रहों का भी अभ्यास करना अनिवार्य बन जाता है ।

मेरे अनुभव के अनुसार पत्रिका मिलान (Matchmaking) को मैंने दो भागों में विभाजित किया है

1. पत्रिका जन्म समय स्थित ग्रहों का मिलान और
2. गुण मिलान ।

वर्तमान समय में हर १० में से ७ व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में समस्या दिखाई देती है । कई लोगों को धन समबन्धित समस्याएँ तो किसी को नौकरी या बिजनेस सम्बंधित समस्याएँ किसी को संतान की समस्या तो किसी को मानसिक या शारीरिक समस्याएँ तो किसी को सम्पति की समस्याएँ आदि आदि... । इसीलिए उपरोक्त पत्रिका को दो भागों में देखना जरुरी बन जाता है।

(१) पत्रिका मिलान (Matchmaking)

1) सबसे पहले हमारे पास दोनों (लड़का-लड़की) की पत्रिका होनी चाहिए । (पत्रिका मिलान का उपयोग विवाह कराने वक्त और सांझेदारी में व्यवसाय करने वक्त किया जाता है)
2) दोनों की लग्न (जन्म) कुंडली, भाव चलित कुंडली, नवमांश और चन्द्र यह चारों कुंडलियों का अभ्यास करे । एक सूत्र के अनुसार यहाँ अष्टकवर्ग और भन्नाष्टक वर्ग भी देखते है । यदि सप्तम भाव में अष्टकवर्ग में २४ या उससे अधिक बिन्दु हो तो शुभ माना जाएगा और भिन्नाष्टक वर्ग में ४ से ऊपर हो तो शुभ माना जाएगा (अष्टकवर्ग) ।[1]
3) यदि दोनों की कुंडली में तलाक का योग बन रहा है तो तलाक होना सम्भव हो जाता है । यदि एक की कुंडली में तलाक का योग हो और दूसरे की कुंडली में ना हो तो तलाक नहीं होता । यदि बृहस्पति की दृष्टि सप्तम पर हो तो वह हर हाल में वैवाहिक जीवन को बचाने का प्रयास करता है ।
4) लग्न कुंडली का सप्तम भाव आपको जीवनसाथी के बारे में बताएगा आप भाव, भावेश कारकत्व को देखकर इसका पता लगा सकते है । नवमांश कुंडली का प्रथम भाव लग्न और लग्नेश की शुभ स्थिति विवाह आसानीसे होगा यह बताता है इससे विपरीत अशुभ स्थिति विवाह होने में विलम्ब और बाधाएँ देगा (वर्ग कुंडलियों से सटीक फलित) ।[2] नवमांश लग्न में जो राशी है उसी के अनुसार जीवनसाथी का स्वभाव देखा जाएगा । इसमें आप द्वितीय भाव से वैवाहिक जीवन में धन की स्थिति, परिवार, वाणी देख सकते है । चतुर्थ भाव से वैवाहिक जीवन में सुख, पंचम से संतान, षष्ठ से वैवाहिक जीवन में समस्याएँ, रोग, ऋण, शत्रु आदि ।

सप्तम भाव जीवनसाथी का सम्पूर्ण बाह्य-आतंरिक व्यक्तित्व बताएगा । अष्टम भाव वैधव्यदोष, नवम भाव भाग्य कितना साथ देगा, दशम भाव कर्म कैसा रहेगा वैवाहिक जीवन में और सभी के प्रति व्यवहार कैसा होगा। एकादश भाव से आय प्राप्ति के साधन और द्वादश भाव से खर्च, निजी समस्याएँ, शैयासुख देखा जाएगा।

5) पुरुष की लग्न पत्रिका में शुक्र की स्थिति और सप्तमेश देखिए और नवमांश में भी देखिए अगर शुक्र पीड़ित है तो वैवाहिक जीवन में सुख का अभाव रहेगा। इसी तरह स्त्री की पत्रिका में बृहस्पति की स्थिति और सप्तमेश को देखिए अगर वह पीड़ित होगा तो वैवाहिक जीवन में पति और पुत्र संतान के सुख में अभाव रहेगा ।
6) महादशा और अन्तर्दशा भी देखनी चाहिए यदि दोनों की पत्रिका में पापी या अशुभ ग्रहों की दशा चल रही हो तो ज्योतिषी को समय अनुसार कार्य करना चाहिए ।
7) दोनों की पत्रिका में राशी मैत्री (ग्रहमैत्री) भी देखनी आवश्यक है जैसे कुम्भ राशि का लड़का और वृषभ राशी कि लड़की जिसमे दोनों राशी के ग्रह शनि एवं शुक्र आपस में मित्र है तो यह अच्छा रहेगा परन्तु मेष राशी का लड़का और मकर राशि कि लड़की यह ठीक नहीं होगा क्योंकि मंगल एवं शनि आपस में शत्रु की भूमिका निभाते है । यहाँ पर राशी मैत्री न होने से गुण मिलान में भकूट दोष उत्पन्न होगा ।
8) मंगल दोष देखना आवश्यक है और यदि मंगल दोष है तो उसके भंग होने के सूत्र भी देखना आवश्यक बन जाता हैं । मांगलिक का विवाह मांगलिक से ही होना चाहिए अथवा एक की पत्रिका में मांगलिक दोष भंग होना चाहिए । यह नहीं होने से दोनों में मारपीट-जघडा होता है या दोनों में से एक की मृत्यु भी होना सम्भव हो जाती है । मांगलीक का अर्थ एक व्यक्ति दूसरे पर हावी रहेगा इसीलिए दोनों की कुंडली में दोष होने से एक-दूसरे को बर्दास्त करने का प्रयास करेंगे । सभी परिस्थिति में मंगल अशुभ फल नहीं देता है पत्रिका में १, ४, ७, ८, १२ भाव में मंगल होने से यह दोष होगा परन्तु उसके अनेक भंग होने के कारण भी है जिसे देखना आवश्यक बनता है (मंगल दोष कारण और निवारण)।[3]
9) लग्न पत्रिका के सप्तमभाव में निम्न ग्रह उपस्थित हो या उसकी दृष्टि हो तो यह फल होता है जैसे-

- चन्द्र होने से जीवनसाथी भावुक, कोमल अंगोंवाला, शान्त
- सूर्य होने से दोनों में स्वाभिमान का भाव होगा, कोई एक दूसरे के सामने जुकेगा नहीं और इसी बजह से समस्याएँ होगी
- मंगल होने से लड़ाई-जघडा, मारपीट, हाथ उठाना
- बुध होने से तर्कशील, बुद्धिमान, जाशुस, ठंडापन वाला, शनि का भी साथ में प्रभाव हो तो नपुंशकता
- बृहस्पति स्त्री की पत्रिका में सप्तम भाव पर हो तो निम्न (नीच) राशी या शत्रु राशि में हो तो सप्तम भाव नाश करेगा, विवाह में विलम्ब एवं समस्या देगा
- शुक्र पुरुष की पत्रिका में सप्तम भाव पर हो तो भाव-नाश करेगा, विवाह में विलम्ब करवाएगा और जातक को कामुक बनवाएगा, लग्न और सप्तम में शुक्र होने से अनेक सम्बन्ध भी होते है ।
- शनि होने से एकांती, आलसी, त्यागवृत्ति एवं बुध का भी संयोग हो तो नपुंसकता
- राहु होने से मति भ्रम, गलत तर्क, गलत आशंका
- केतु होने से अलगाव, त्याग एवं जीवनसाथी से दूर रहेना

सप्तम भाव में शनि की दृष्टि होने से विवाह विलम्ब से होगा ३२ या ३६ साल के बाद एवं पत्रिका में मंगलदोष होने से विवाह २८ साल के बाद ही होता है इनसे पहले हो जाए तो टूट भी सकता है ।

विवाह के योग

सप्तमेश कि दशा, सप्तम में बैठे ग्रह की दशा, सप्तम भाव को देख रहे ग्रह की दशा, पुरुष की पत्रिका में शुक्र की दशा और स्त्री की पत्रिका में बृहस्पति की दशा, राहु की दशा, शनि की साढेसाती में तथा गोचर में जब शनि या बृहस्पति का सम्बन्ध २, ७, ११ से हो तब विवाह के योग बनाते है । यह सभी विवाह के योग है इनमें से जिस भी ग्रह के अंश अधिक हो उस ग्रह को पहले लीजिए ऐसे तीनों ग्रह महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यंतर दशा निकालिए उनसे आपको विवाह का समय ज्ञात हो जाएगा । एक अन्य सूत्र के अनुसार सप्तम भाव में शुभ राशि हो, वह शुभ ग्रह से युत और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो निश्चय ही शीघ्र विवाह होता है । (कुण्डली-मिलान) [4]

इसके अतिरिक्त केपी एस्ट्रोलोजी के अनुसार सप्तमभाव का उप-नक्षत्र स्वामी का नक्षत्र स्वामी और उसका उप-नक्षत्र स्वामी यदि २-७-११ या ५-७-११ भाव का सूचक बना हो तो विवाह अवश्य होगा और इसकी ५-७-११ भाव की संयुक्त दशा, भुक्ति और अन्तर में होगा । (केपी विधान) [5]

इसके अतिरिक्त महर्षि जैमिनी के मतानुसार 'जैमिनी ज्योतिष' में नवांश दशा का भी इसमें वह प्रयोग करते है और उससे भी विवाह का समय निश्चित किया जाता है (जैमिनी ज्योतिष से फलित) । [6]

शुभ विवाह होने के कतिपय योग

1) दोनों की पत्रिका में राशी मैत्री हो
2) वर का शुक्र जिस राशी में हो वही राशी कन्या की हो
3) वर के सप्तमांश D7 चार्ट की लग्न राशि कन्या की राशि हो, इससे सन्तान भी अच्छी होती है
4) वर का लग्नेश जिस राशी में हो वही कन्या की राशी हो या वर के चन्द्र कुंडली से सप्तम भाव में जो राशी हो वही कन्या की हो तो दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक बितता है
5) दोनों की पत्रिका में एक-दूसरे के लग्न सम-सप्तक हो
6) दोनों की चन्द्र राशि का सम्बन्ध आपस में २/१२, ६/८ या ६/१२ ना हो
7) दोनों के निजी (मैथुन) सम्बन्धों एवं शारीरिक सुख के लिए वर की पत्रिका में शुक्र और वधु की पत्रिका में मंगल देखना अत्यंत आवश्यक होता है । यह शुक्र-मंगल एक-दूसरे की पत्रिका में आमने-सामने हो, एक-दूसरे कि पत्रिका में युति करके बैठे हो या एक-दूसरे पर दृष्टि हो तो शुभ रहेगा । (यहाँ पर शुक्र-मंगल की युति पीड़ित हो तो चारित्रिक दोष भी बनाता है यह भी हमें देखना है)

द्वादशे स्वोच्चराशिस्थे मदे शुभ समन्विते ।
लग्नेशे बल संयुक्ते कलत्रस्थान संयुते ।।

यदि सप्तमेश अपने उंच में हो या सप्तम में शुभ ग्रह हो तथा लग्नेश बलवान होकर सप्तम में हो तो उसकी पत्नी सदगुणों वाली तथा अनेक सन्तति द्वारा कुलवर्धिनी होती है । (बृहत् पाराशर होरा शास्त्रम्) [7]

(२) गुण-मिलान

पत्रिका मिलान के बाद आवश्यक है कि मिलान में कितने गुण मिलते है यह देखे । गुण मिलान के लिए मुख्यतः आठ बातों को ध्यान में रखकर देखा जाता है । इसमें उपस्थित दोष उनका परिहार (तोड़) और उपायों को भी ध्यान में लिया जाता है ।

अष्टकूट गुण-मिलान

१	वर्ण ०१	स्वभाव, कार्य
२	वश्य ०२	प्रभुत्व (दोनों में से किस के आधीन रहना)
३	तारा ०३	भाग्य
४	योनी ०४	मानसिक स्थिति एवं रतिक्रीडा सम्बन्ध
५	ग्रहमैत्री ०५	अनुकूलता, मित्रता
६	गण ०६	दोनों का एक-दूसरे के प्रति व्यवहार
७	भकूट ०७	प्रेम, सन्तान और धन
८	नाडी ०८	स्वास्थ्य, रोग और मृत्यु
	३६ गुण	

अगर दोनों की पत्रिका मिलान में २७ से ऊपर गुण मिलते है तो शुभ-विवाह माना जाता है । १८ से ऊपर हो तो मध्यम विवाह माना जाता है और १८ से नीचे गुण हो तो अशुभ विवाह माना जाता है ।
अब सभी आठ गुणों को एक-एक करके विस्तार से समझने का प्रयास करते है ।

(१) वर्ण
वर्ण के चार प्रकार है - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और क्षुद्र । उंच वर्ण का निम्न वर्ण से सम्बन्ध ठीक नहीं रह पाएगा और निम्न वर्ण का उंच वर्ण का सम्बन्ध ठीक नहीं रहेगा ।
उदाहरण के लिए नीचे के कोष्टक में देखिए-

ब्राह्मण – ब्राह्मण ✓	क्षुद्र – ब्राह्मण ✗
ब्राह्मण - क्षत्रिय ✓	क्षुद्र – क्षत्रिय ✗
ब्राह्मण – वैश्य ✓	क्षुद्र - वैश्य ✗

(२) वश्य
- जिस प्रकार कोई वनचर जल में नहीं रह सकता
- जिस प्रकार कोई जलचर वन में नहीं रह सकता
- किट-पक्षी जल में नहीं रह सकता
- मानव जल में नहीं रह सकता

उसी प्रकार इसका सम्बन्ध समजिए

चतुस्पाद – चार पैरो वाला	इनमे आपस में मित्रता और शत्रुता देखा जाता है ।
किट – पक्षी	
वनचर – वन्य प्राणी	
द्रिपाद – मानव	

(३) तारा
तारा मिलान नौं प्रकार की होती है । उसमे से वर के नक्षत्र से गिनकर वधु के नक्षत्र और वधु के नक्षत्र से गिनकर वर के नक्षत्र तक तारा गिनने पर विपत, प्रत्यरी और वध तारा नहीं आनी चाहिए बाकी की ताराएँ ठीक है ।

(४) योनी
जिस तरह कोई जलचर का सम्बन्ध वनचर से नहीं होता उसी तरह अन्य जिव-जन्तु का सम्बन्ध भी देखना है कि वह आपस में मित्र है कि शत्रु । उदाहरण के लिए नीचे के कोष्टक में देखिए-
अश्व, गज, मेष, सर्प श्वान, मार्जार, मूषक, महिष, व्याध्र, मृग, वानर, नकुल और सिंह

(५) ग्रह (राशि) मैत्री
वर और वधु की जो चन्द्र राशि है उसके स्वामी आपस में नैसर्गिक मित्र होने चाहिए अगर शत्रु है तो ग्रहमैत्री नहीं होगी । अगर चन्द्र राशि के साथ लग्न राशि भी आपस में मित्र हो तो शुभ प्रभाव ज्यादा रहेगा । ग्रहमैत्री मिलना आवश्यक है यदि इसमें पाँच में पाँच पॉइंट मिल गए तो ऊपर के चारों (वर्ण, वश्य, तारा और योनी) नहीं मिल रहे तो भी उनका परिहार (दोषभंग) हो जाएगा । ग्रहमैत्री नहीं है तो परेशानी, दोनों में आपस में बनेगी नहीं, एक ही छत के नीचे रहकर भी दोनों बात भी नहीं करेंगे । शयनखंड में भी दोनों एक-दूसरे से विपरीत मुख करके सोएंगे ।

(६) गण
गण मुख्य तीन प्रकार के होते है- देव, राक्षस और मनुष्य ।
- वर वधु में एक का वर्ण देव और दूसरे का भी देव या मानव हो तो उत्तम
- वर वधु में एक का एक का मनुष्य और और दूसरे का देव या मनुष्य तो उत्तम
- एक का देव या मानव हो दूसरे का राक्षस हो तो अशुभ

इनमे भी देव, मानव और राक्षस आपस में मित्रता देखे
देव वर्ण या मानव वर्ण वाले शान्त स्वभाव वाले होते है । पर राक्षस वर्ण वाला हत्याचारी, हठी स्वभाव का और जिसे कोई भी परिस्थिति हो जुकना पसन्द नहीं होता ।

(७) भकूट
भकूट दोष तीन प्रकार से बनता हैं । एक ६/८ का दूसरा ९/५ का और तीसरा २/१२ का । तीनों में फल अलग-अलग होते हैं । वर वधु की पत्रिका मिलान में (एक दूसरे की पत्रिका में) चन्द्र की स्थिति ६/८, ९/५ या २/१२ हो तो भकूट दोष बनता है । जैसे वर की राशी मेष हो और कन्या की राशि कन्या हो तो दोनों में राशी गिनते है तो आपस में ६/८ का सम्बन्ध हुआ । मेष से कन्या राशी ६ हुई और कन्या से मेष ८ वीं हुई । ऐसे ही हमें २/१२ और ९/५ का देखना हैं ।

फल
- ६/८ – इससे शारीरिक कष्ट उत्पन्न होगा
- ९/५ – सन्तान प्राप्ति में बाधा और रिश्ते में दूरियाँ
- २/१२ – धन की समस्या, कारोबार में नुकशान, दोनों में वियोग-खर्च

भकूट दोष किस राशी को लगेगा

जिस वर या वधु की आपस में राशि निम्न हो उसे अवश्य भकूट दोष लगेगा ।

वर	वधु
कुम्भ	मिथुन
कर्क	वृश्चिक
कन्या	मकर
मीन	कर्क

भकूट दोष भंग होने के सूत्र

- दोनों की चन्द्र राशि के स्वामी आपस में मित्र हो
- युवक से युवती की राशि पाँचवे स्थान और युवती से युवक की राशि नवम स्थान पर पड़ रही हो

(८) नाडी

नाडी तीन प्रकार की होती है- आदि, मध्य और अन्त । इनमे से वर वधु की पत्रिका मिलान में आपस में समान नाडी हो तो यह दोष बनता है जैसे दोनों की आदि या दोनों की मध्य या दोनों की अंत्य । दोनों की अलग-अलग नाडी होने से यह दोष नहीं बनेगा ।

- वर वधु दोनों की आदिनाडी हो तो विवाद, चिन्ता, तलाक, सन्तान से सम्बंधित समस्या, गर्भ धारण में समस्या या सन्तान में कोई कमी रहती है ।
- वर वधु दोनों की मध्यनाडी हो तो तलाक, दुर्घटना, सन्तान की चिन्ता, दोनों में से एक की मृत्यु या मृत्यु समान कष्ट, गर्भ धारण में समस्या अथवा सन्तान में कोई कमी रह जाना होता है ।
- वर वधु की अंत्यनाडी हो तो तलाक, मृत्यु, सन्तान की समस्या, दोनों में से एक का स्वास्थ्य ठीक न रहना होता है ।

नाडीदोष भंग होने के सूत्र

- वर वधु की पत्रिका में दोनों के नक्षत्र एक हो पर उनके चरण अलग-अलग हो
- वर वधु की चन्द्र राशि एक हो लेकिन नक्षत्र अलग-अलग हो
- वर वधु का जन्म एक ही नक्षत्र के अलग-अलग चरण में हुआ हो परन्तु लडके का नक्षत्र चरण बढ़ते क्रम में होना चाहिए यदि उतरते क्रम में हो तो दोष लगेगा । जैसे लडके का प्रथम चरण और लड़की का चतुर्थ चरण इसमें दोष लगेगा परन्तु लड़की का चतुर्थ चरण और लडके का प्रथम चरण हो तो दोष नहीं होगा । अन्य उदाहरण से लडके का दूसरा चरण और लड़की का तीसरा चरण हो तो दोष लगेगा परन्तु लडके का तीसरा और लड़की का दूसरा हो तो दोष नहीं लगेगा ।
- वर वधु की पत्रिका में यदि उनका जन्म यह आठ नक्षत्रों में हुआ हो तो भी नाडीदोष नहीं लगता- रोहिणी, मृगशिरा, आद्रा, पुष्य, विशाखा, श्रवण, उत्तराभाद्रपाद और रेवती ।
- ब्राह्मण वर्ण की राशि- कर्क, वृश्चिक, और मीन राशि में जन्मे जातकों को नाडीदोष लगेगा ।

भकूटदोष और नाडीदोष का उपाय

- लड़के और लड़की के नामका संकल्प कराके सवालाख 'महामृत्युंजयमंत्र का अनुष्ठान' कराना चाहिए । सवालाख जप उसका दशांश संख्या का होम, होम की दशांश संख्या का तर्पण और तर्पण की दशांश संख्या का मार्जन करना चाहिए । भगवान् शिव की विधिवत पूजा एवं 'द्वादशलिङ्गतोभद्र' स्थापन आदि करना चाहिए । पूजा सम्पूर्ण शास्त्रोक्त विधि अनुसार होनी चाहिए। अथवा अपने जन्म-दिन पर गौदान, स्वर्णदान, अनाज भोजन और वस्त्रों का दान करे (एक ही बार करे) । अथवा अपने जन्म-दिन पर अपने वजन के बराबर अन्नदान/अनाज का दान करे (एक ही बार करे) ।

निषकर्ष

यदि पत्रिका मिलान में ग्रहमैत्री, भकूटदोष या नाडीदोष हो तो पत्रिका नहीं मिल रही ऐसा कह देना चाहिए । परन्तु कोई नहीं मान रहा तो भविष्य में होने वाली समस्याओं से उन्हें अवगत करा देना चाहिए यह एक श्रेष्ठ ज्योतिषी का परम कर्तव्य बन जाता है । इस प्रकार पत्रिका मिलान में दोनों पहलू पत्रिका मिलान और गुण मिलान देखना अति आवश्यक बन जाता है । पत्रिका मिलान पर एक लडके और लड़की का पूरे जीवन का आधार होता है इसीलिए इस पर शान्त चित्त से विचार करना चाहिए ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. 'अष्टकवर्ग' - पृष्ठ संख्या ४८ लेखक : सी. एस. पटेल प्रकाशन : सागर पब्लिकेशन्स, दिल्ली
2. 'वर्ग कुंडलियों से सटीक फलित' - पृष्ठ संख्या १४२ लेखक : वि. पी. गोयल प्रकाशन : सागर पब्लिकेशन्स
3. 'मंगल दोष कारण और निवारण' – पृष्ठ संख्या ८० डॉ. राधाकृष्ण श्रीमाली प्रकाशन : मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली
4. 'कुण्डली मिलान' – पृष्ठ संख्या १७७ मार्गदर्शक : श्री के. एन. राव / श्री के. के. जोशी सम्पादक : भारतीय विद्या भवन के छात्रों द्वारा एक विस्तृत शोध-विश्लेषण व व्याख्या सहित प्रकाशन : वाणी पब्लिकेशन्स, दिल्ली
5. 'केपी विधान' - पृष्ठ संख्या ७५ लेखक : भारत शर्मा
6. 'जैमिनी ज्योतिष से फलित' - पृष्ठ संख्या १५८ लेखक : वि. पी. गोयल प्रकाशन : सागर पब्लिकेशन्स
7. 'बृहत् पाराशर होरा शास्त्रम्' – सप्तमभाव अध्याय, श्लोक १४, पृष्ठ संख्या १५२ व्याख्याकार : सुरेश चन्द्र मिश्र ज्योतिषाचार्य प्रकाशन : रंजन पब्लिकेशन्स, दिल्ली